रविवार 6 जून, 2021

विषय — ईश्वर ही एकमात्र कारण और निर्माता है

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 139 : 14

"मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।"

उत्तरदायी अध्ययन: **यशायाह 61 : 10, 11**
यिर्मयाह 32: 18, 19

10 मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे
उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को
सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।
11 क्योंकि जैसे भूमि अपनी उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ बोया जाता है उसको वह उपजाती है,
वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा॥
18 तू हजारों पर करुणा करता रहता परन्तु पूर्वजों के अधर्म का बदला उनके बाद उनके वंष के लोगों को भी
देता है, हे महान और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है,
19 तू बड़ी युक्ति करने वाला और सामर्थ के काम करने वाला है; तेरी दृष्टि मनुष्यों के सारे चालचलन पर लगी
रहती है, और तू हर एक को उसके चालचलन और कर्म का फल भुगताता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1 : 1, 3, 4, 10, 12, 14 (*से* ;), 16, 18, 21, 24-26 (*से* :), 27, 30, 31 (*से 1st* .)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
3 तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया।
4 और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया।
10 और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथ्वी कहा; तथा जो जल इकट्ठा हुआ उसको उसने समुद्र कहा: और
परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

12 तो पृथ्वी से हरी घास, और छोटे छोटे पेड़ जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है, और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्ही में होते हैं उगे; और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
14 फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों।
16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाईं; उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभुता करने के लिये बनाया: और तारागण को भी बनाया।
18 तथा दिन और रात पर प्रभुता करें और उजियाले को अन्धियारे से अलग करें: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
21 इसलिये परमेश्वर ने जाति जाति के बड़े बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिन से जल बहुत ही भर गया और एक एक जाति के उड़ने वाले पक्षियों की भी सृष्टि की: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
24 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया।
25 सो परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन पशुओं को, और जाति जाति के घरेलू पशुओं को, और जाति जाति के भूमि पर सब रेंगने वाले जन्तुओं को बनाया: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
30 और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु हैं, जिन में जीवन के प्राण हैं, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिए हैं; और वैसा ही हो गया।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. यशायाह 11 : 1, 10

1 तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी।
10 उस समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिये एक झण्ड़ा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगें, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा॥

3. लूका 4 : 1 (फिर यीशु) *केवल*, 17 (वह जगह निकाली), 18

1 फिर यीशु ... ।
17 ... वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।
18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।

4. मत्ती 4 : 23, 24

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

5. मत्ती 9 : 18-25

18 वह उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।
19 यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।
20 और देखो, एक स्त्री ने जिस के बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।
21 क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी।
22 यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।
23 जब यीशु उस सरदार के घर में पहुंचा और बांसली बजाने वालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा तब कहा।
24 हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है; इस पर वे उस की हंसी करने लगे।
25 परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी।

6. 2 कुरिन्थियों 4 : 6, 8, 9, 16-18

6 इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥
8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते।
9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते।
16 इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।
17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।
18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

7. मत्ती 5 : 48

48 इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 85 : 30-32

महान शिक्षक कारण और प्रभाव दोनों को जानते थे, जानते थे कि सत्य स्वयं को संप्रेषित करता है लेकिन कभी भी त्रुटि नहीं देता है।

2. 518 : 24-6

उत्पत्ति 1. 31. तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया॥

दैवीय सिद्धांत, या आत्मा, सभी को समझता है और व्यक्त करता है, और इसलिए सभी को उतना ही परिपूर्ण होना चाहिए जितना कि दैवीय सिद्धांत परिपूर्ण है। आत्मा के लिए कुछ भी नया नहीं है। शाश्वत मन के लिए कुछ भी नया नहीं हो सकता, सभी चीजों का लेखक, जो अनंत काल से अपने विचारों को जानता है। देवता उनके कार्य से संतुष्ट थे। अन्यथा, वह कैसे हो सकता है, क्योंकि आध्यात्मिक निर्माण उनके अनंत आत्म-नियंत्रण और अमर ज्ञान का प्रकोप था?

3. 472 : 24 (सब)-30

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है। इसलिए पाप, बीमारी या मृत्यु की एकमात्र वास्तविकता यह भयानक तथ्य है कि अवास्तविकता मानव को वास्तविक लगती है, विश्वास को गलत करती है, जब तक कि भगवान उनके भेस को बंद नहीं करता। वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे भगवान के नहीं हैं।

4. 286 : 21-26

ईश्वर के विचार परिपूर्ण और शाश्वत हैं, पदार्थ और जीवन हैं। भौतिक और लौकिक विचार मानव हैं, जिसमें त्रुटि है, और चूंकि भगवान, आत्मा, एकमात्र कारण है, उनके पास एक दिव्य कारण का अभाव है। लौकिक और भौतिक तत्त्व आत्मा की रचना नहीं हैं। वे आध्यात्मिक और शाश्वत के नकली हैं।

5. 239 : 23-32

नश्वर मन मानव उद्देश्यों की स्वीकृत सीट है। यह भौतिक अवधारणाओं का निर्माण करता है और शरीर की हर अप्रिय क्रिया को उत्पन्न करता है। यदि क्रिया दिव्य मन से निकलती है, तो क्रिया सामंजस्यपूर्ण होती है। यदि यह गलत नश्वर मन से आता है, तो यह कलहपूर्ण है और पाप, बीमारी, मृत्यु में समाप्त होता है। वे दो विपरीत स्रोत कभी भी फव्वारा या धारा में नहीं मिलते हैं। परफेक्ट माइंड आगे की पूर्णता भेजता है, क्योंकि गॉड इज माइंड। नश्वर मन अपने स्वयं के सदृशों को भेजता है, जिनमें से बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "सभी गुमान है।"

6. 243 : 25-18

सत्य में त्रुटि की कोई चेतना नहीं है। प्रेम में घृणा का भाव नहीं होता। जीवन का मृत्यु से कोई संबंध नहीं है। सत्य, जीवन और प्रेम अपने से भिन्न हर चीज के विनाश का नियम हैं, क्योंकि वे ईश्वर के अलावा कुछ भी घोषित नहीं करते हैं।

बीमारी, पाप और मृत्यु जीवन का फल नहीं हैं। वे ऐसे लोग हैं जो सत्य को नष्ट कर देते हैं। पूर्णता अपूर्णता को चेतन नहीं करती है। भगवान जितना अच्छा है और सभी का स्रोत है, वह नैतिक या शारीरिक विकृति उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन इस तरह की विकृति वास्तविक नहीं है, लेकिन भ्रम है, त्रुटि का मतिभ्रम। दिव्य विज्ञान इन भव्य तथ्यों का खुलासा करता है। किसी भी रूप में कभी भी डरने या न मानने की गलती से, उनके आधार पर यीशु ने जीवन का प्रदर्शन किया।

यदि हम पालने और कब्र के बीच दिखाई देने वाली चीज़ों से मनुष्य के बारे में अपनी सारी धारणाएँ प्राप्त करते हैं, तो मनुष्य में सुख और अच्छाई का कोई ठिकाना नहीं होगा, और कीड़े उसका मांस छीन लेंगे; लेकिन पॉल

लिखता है: "जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।"

मनुष्य जन्म, परिपक्वता और क्षय के दौर से गुजर रहा है, वह जानवरों और सब्जियों की तरह है, - क्षय के नियमों के अधीन। यदि मनुष्य अपने अस्तित्व के प्रारंभिक चरण में धूल था, तो हम इस परिकल्पना को स्वीकार कर सकते हैं कि वह अंततः अपनी आदिम स्थिति में लौट आता है; परन्तु मनुष्य कभी मनुष्य से अधिक या कम नहीं होता।

7. 275 : 10-19

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

8. 205 : 7-12

विश्वास करने की यह त्रुटि कब सामने आएगी कि भौतिकता में जीवन है, और यह पाप, बीमारी और मृत्यु ईश्वर की रचनाएँ हैं? यह कब समझा जाएगा कि सामग्री में न तो बुद्धिमत्ता है, जीवन है, न ही संवेदना है, और यह कि विपरीत विश्वास सभी दुखों का विपुल स्रोत है?

9. 207 : 20-26

इसके एक कारण और भी हैं। इसलिए किसी अन्य कारण से कोई प्रभाव नहीं हो सकता है, और औकात में कोई वास्तविकता नहीं हो सकती है जो इस महान और एकमात्र कारण से आगे नहीं बढ़ती है। पाप, बीमारी, बीमारी और मृत्यु विज्ञान के नहीं होने के हैं। वे त्रुटियां हैं, जो सत्य, जीवन या प्रेम की अनुपस्थिति को रोकती हैं।

10. 200 : 16-19

अस्तित्व के विज्ञान में महान सत्य, कि वास्तविक मनुष्य था, है, और हमेशा रहेगा, निर्विवाद है; क्योंकि यदि मनुष्य परमेश्वर का प्रतिबिम्ब, और प्रतिबिम्ब है, तो वह न तो उलटा है, और न उलटा, परन्तु सीधा और परमेश्वर जैसा है।

11. 276 : 17-24

यदि परमेश्वर को केवल मन और जीवन माना जाता है, तो पाप और मृत्यु के लिए कोई अवसर होना बंद हो जाता है। जब हम विज्ञान में सीखते हैं कि स्वर्ग में हमारे पिता भी कैसे परिपूर्ण हैं, तो विचार को नए और स्वस्थ चैनलों में बदल दिया गया है, - सामंजस्यपूर्ण मनुष्य सहित ब्रह्मांड के सिद्धांत के लिए अमरता और भौतिकता से दूर चीजों के चिंतन की ओर।

12. 476 : 32-5

यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण ने बीमारों को चंगा किया। इस प्रकार यीशु ने सिखाया कि ईश्वर का राज्य अक्षुण्ण, सार्वभौमिक है, और वह मनुष्य शुद्ध और पवित्र है।

13. 205 : 12-13

ईश्वर ने सभी को मन से बनाया, और सभी को पूर्ण और शाश्वत बनाया।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6